(३) 'द्रव्य' एवं 'परिणाम' की समस्या का समाधान

(अ) गुणात्मक परमाणुवाद—

एम्पेडोक्लीज़ और एनेक्ज़ेगोरस

(ब) परिमाणात्मक परमाणुवाद

ल्यूसिपस और डेमोक्रिटस

इनके अतिरिक्त सॉक्रेटीज़-पूर्व युग के दर्शन में एक सोफिस्ट सम्प्रदाय भी आता है, जो कि उपर्युक्त सभी समस्याओं के प्रति एक प्रकार का अभावात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। उसका कथन यह है कि जगत्-सम्बन्धी समस्याओं की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना बेकार है, क्योंकि मानवीय बुद्धि द्वारा उनका निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान होना सम्भव नहीं। सोफिस्ट लोग ज्ञान के क्षेत्र में सन्देहवाद का प्रतिपादन करते हैं। प्रोटेगोरस (Protagoras) का नाम इस सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

१. द्रव्य की समस्या

थेलीज़-एनेक्ज़िमेण्डर-एनेक्ज़िमेनीज़-पाइथेगोरस

१. थेलीज़ (Thales) (६२४ ई० पू०—५४६ ई०पू०)

जीवन-वृत्त—थेलीज़ पाश्चात्य दर्शन के सर्वप्रथम दार्शनिक हैं। इनका जन्म ई० से ६२४ वर्ष पूर्व ग्रीस के माइलेटस (Miletus) नामक स्थान पर हुआ था। ग्रीस के सात महापुरुषों में इनका भी नाम आता है। एक कुशल राजनीतिज्ञ, गणितज्ञ और ज्योतिर्विद् के रूप में ग्रीस में इनकी बड़ी ख्याति थी। कहा जाता है कि इन्होंने २८ मई ५८५ ई० पूर्व में होने वाले सूर्य-ग्रहण की भविष्यवाणी की थी।

थेलीज़ ने सम्भवतः अपने जीवन में कुछ भी नहीं लिखा। उनके विषय में हमारी सारी जानकारी ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटोस (Herodotos) से आयी है। थेलीज़ ने मिस्र की रेखागणित-प्रणाली का प्रचार प्रथम बार ग्रीस में किया, जिससे पता चलता है कि उसने जीवन में मिस्र की यात्रा अवश्य की थी। उसने नील नदी के जल-प्लावन के विषय में अपना एक भौगोलिक मत भी प्रतिपादित किया था। मिस्र की तमाम नदियों में केवल नील नदी का जल ही गर्मी के दिनों में बढ़ जाता है और जाड़े में घट जाता है। हेरोडोटस ने इसकी तीन प्रकार से व्याख्या की थी। प्रथम व्याख्या के अनुसार नील नदी का पानी गर्मी के दिनों में इटेसियन हवाओं (Etesian winds) के कारण बढ़ जाता है। प्लैसिटा (Placita) के अनुसार मूल रूप से इस प्रकार की व्याख्या सर्वप्रथम थेलीज़ ने ही की थी। इन सब बातों से पता चलता है कि थेलीज़ ने मिस्र की यात्रा अवश्य की थी और उसने वहाँ बहुत कुछ सीखा भी था।

जहाँ तक थेलीज़ का गणित का ज्ञान है, उसके विषय में प्रोक्लस (Proclus) ने अपने यूक्लिड की पुस्तक के प्रथम भाग में लिखा है कि गणित के कुछ प्रमेयों (Propositions) का ज्ञान थेलीज़ को था जिनमें एक प्रमेय यह भी था कि ''यदि दो त्रिभुजों में एक त्रिभुज के दो कोण दूसरे त्रिभुज के दो कोणों के अलग-अलग बराबर हों और एक ही भुजा दूसरे की संगत भुजा के बराबर हो तो दोनों त्रिभुज सर्वांगसम होते हैं।'' यदि थेलीज़

को इस प्रमेय का ज्ञान न होता तो जैसा कहा जाता है वो जलयानों के बीच की दूरी वह कभी भी ज्ञात नहीं कर सकता था।

जीव-विज्ञान—जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि थेलीज़ ने अपने या अपने दर्शन के विषय में कुछ भी नहीं लिखा है और एरिस्टॉटल के पूर्व जितने भी लोग आये, वे उसे एक इंजीनियर और आविष्कारक के रूप में ही देखते थे। एरिस्टॉटल ही प्रथम व्यक्ति था जिसने थेलीज़ को एक वैज्ञानिक और दार्शनिक के रूप में लिया। एरिस्टॉटल ने थेलीज़ के विषय में जो कुछ लिखा है, उसको हम निम्न तीन कथनों में संक्षिप्त कर सकते हैं—

(१) पृथ्वी जल के ऊपर तैरती है।[२]

(२) जल विश्व की सभी वस्तुओं का उपादान कारण है।[३]

(३) सभी वस्तुएँ दिव्य स्वरूप हैं। चुम्बक चैतन्यमय है, क्योंकि इसके भीतर लोहे को आकर्षित करने की क्षमता है।[४]

प्रथम और द्वितीय कथनों का सार एक ही है जिसका अर्थ है कि विश्व का परम-तत्त्व 'जल' है जिससे सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होती है। संसार की जितनी भी वस्तुएँ हैं, वे 'जल' के ही रूपान्तरण मात्र हैं। इसको अच्छी प्रकार समझने के लिए उस समय ग्रीस की बौद्धिक अवस्था को समझना आवश्यक है। ईसा से पाँचवीं और छठीं शताब्दी पूर्व औषधि-विज्ञान और अन्तरिक्ष-विज्ञान का ग्रीस में काफी बोलबाला था और जीवन की प्रायः सभी घटनाएँ उन्हीं के माध्यम से प्रकट की जाती थीं। थेलीज़ ने भी अपने दर्शन की व्याख्या बहुत कुछ इन्हीं विज्ञानों के आधार पर की है। निम्न तथ्य इस बात की पुष्टि के लिए पर्याप्त हैं—

(१) संसार में जितनी भी वस्तुएँ हैं, उनके अन्दर जल का अंश अवश्य पाया जाता है और किन्हीं-किन्हीं वस्तुओं में तो जल पर्याप्त रूप में पाया जाता है।

(२) जल, प्रायः सभी रूपों और अवस्थाओं में पाया जाता है। हम इसके ठोस, द्रव और गैस तीनों रूपों से परिचित हैं और संसार की सभी वस्तुएँ इन तीनों रूपों में समाहित हो जाती हैं।

(३) वाष्पीकरण (Evaporation) द्वारा समुद्र का जल ऊपर आकाश में उठता है। थेलीज़ ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि अग्नि-रूप आकाशीय नक्षत्र और पिण्ड, वाष्पीकरण द्वारा उठे हुए जल के ही रूपान्तरण मात्र हैं। आकाशीय नक्षत्रों का जीवन और पोषण भी उस नमी से होता है। जो वे नीचे समुद्र के जल से ग्रहण करते हैं।

(४) संहनन (Condensation) द्वारा वही भाप वर्षा द्वारा फिर नीचे आती है और ठोस होकर पृथ्वी के रूप में परिणत हो जाती है। इससे थेलीज़ ने यह निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी भी जल का ही एक रूप है। थेलीज़ ने इसकी पुष्टि इस बात से भी की होगी कि मिस्र का नील नदी का डेल्टा एशिया माइनर की नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बना है।

---

२ मेटा० अ ३, ९८३ ब २१

३ वही, अ, ३, ९८३ ब २१

४ डि० एन० अ, ५, ४११ अ ७

(५) अन्त में, थेलीज़ ने कहा कि जल ही पृथ्वी का रूप नहीं धारण करता, बल्कि पृथ्वी भी जल का रूप धारण करती है। इस बात की पुष्टि के लिए प्रातःकालीन ओस के कण, रात्रि का धुन्ध और अन्तर्भौमिक सोते इत्यादि उदाहरण के रूप में दिये जा सकते हैं।

एरिस्टॉटल ने ऊपर जो थेलीज़ के दर्शन का तीन वाक्यों में संक्षेप दिया है, उनमें से अन्तिम वाक्य का यह अर्थ लगाया जाता है कि एरिस्टॉटल के अनुसार थेलीज़ एक "विश्वात्मा" में विश्वास करता था। पर इसके विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि स्वयं एरिस्टॉटल[५] के ही अनुसार यह एक अनुमान ही है। डॉक्सोग्राफर ईटियस (Aetios) ने भी लिखा है कि थेलीज़ "विश्वात्मा" में विश्वास करता था और वह "विश्वात्मा" कुछ नहीं ईश्वर (God) ही है।[६] सिसरो[७] (Cicero) ने तो यहाँ तक कह डाला कि थेलीज़ के दर्शन में विश्वात्मा का वही स्थान है जो प्लेटो के दर्शन में उसके ईश्वर (Demiurge) का था। उसने स्पष्ट बताया कि थेलीज़ के अनुसार एक दिव्य आत्मा थी जिसने जल से संसार की सभी वस्तुओं का निर्माण किया।

यहाँ पर यह कह देना अनावश्यक न होगा कि ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे यह निष्कर्ष कदापि न निकालना चाहिए कि थेलीज़ आस्तिक (Theist) था। बहुत कुछ सम्भव है कि मूल-द्रव्य 'जल' को ही उसने ईश्वर (God) के रूप में मान लिया हो। यही ठीक भी लगता है, क्योंकि धर्म अथवा धार्मिक ईश्वर की कल्पना को थेलीज़ दर्शन के विकास में बाधक समझता था।

२. एनेक्ज़िमेण्डर (Anaximander) (६१० ई० पू०—५४५ ई० पूर्व)

जीवन-वृत्त—एनेक्ज़िमेण्डर थेलीज़ के शिष्य और मित्र थे। थेलीज़ की भाँति माइलेटस का नागरिक होने के कारण इनको भी माइलेशियन दार्शनिक के नाम से अभिहित किया जाता है। इनकी "प्रकृति पर निबन्ध" (On Nature) नामक रचना योरोपीय दर्शन-साहित्य की प्रथम कृति है। पर इसके कुछ ही अंश प्राप्त हैं; शेष भूतकाल के गर्भ में चले गए हैं।

अपने पुरोगामी मित्र दार्शनिक थेलीज़ की भाँति एनेक्ज़िमेण्डर ने भी कुछ व्यावहारिक आविष्कारों द्वारा अपनी ख्याति बढ़ा ली थी। कुछ इतिहासकारों के अनुसार धूप-घड़ी (Gnomon) के निर्माण का श्रेय एनेक्ज़िमेण्डर को था, पर इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। प्रसिद्ध डॉक्सोग्राफर हेरोडोटस ने लिखा है कि यह यन्त्र बेबिलोनिया से आया और थेलीज़ ने इस यन्त्र का प्रयोग अयन-काल (Solstices) और विषुवत-काल (Equinoxes) को निर्धारित करने में अवश्य किया होगा। इसके साथ-साथ एनेक्ज़िमेण्डर पहला व्यक्ति था जिसने मानचित्र (Map) का निर्माण किया जिसका प्रयोग माइलेशियन लोग काला सागर (Black Sea) में भ्रमण करते समय किया करते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि एनेक्ज़िमेण्डर ने भी अपने दर्शन-गुरु थेलीज़ की भाँति विज्ञान और दर्शन दोनों की परम्परा को साथ-साथ निभाया।

---

५ डि० एन० अ. ५, ४११ अ ७
६ ईटि० १, ७, ११, = स्टोव i, ५६
७ डि० नैचु० द, i, २५

तत्त्व-विज्ञान— एनेक्ज़िमेण्डर के विषय में दर्शन-जगत् को जो कुछ जानकारी है, वह प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री थियोफ्रेस्टस से मिली है। थियोफ्रेस्टस को एनेक्ज़िमेण्डर द्वारा लिखित पुस्तक की जानकारी अवश्य थी, क्योंकि एक बार उसने एनेक्ज़िमेण्डर के ही शब्दों का ठीक उसी प्रकार उद्धरण पेश किया था। थियोफ्रेस्टस ने अपनी प्रथम पुस्तक में उसके विषय में जो कुछ भी लिखा था, उसके कुछ अंश यहाँ दिये जाते हैं—

''एनेक्ज़िमेण्डर ने, जो कि माइलेटस का निवासी प्रेक्सियाडीज का पुत्र, थेलीज़ का सहयोगी और सह-नागरिक था, कहा था कि 'असीम' सभी वस्तुओं का मूल और उपादान कारण है। वह प्रथम व्यक्ति था जिसने 'उपादान कारण' यह नाम प्रचलित किया। वह कहता है कि मूल कारण न तो जल है और न तो दूसरे कोई तथाकथित तत्त्व हैं, वरन् ऐसा द्रव्य है जो उन सबसे भिन्न है, जो अनन्त है और जिससे सभी ग्रह, नक्षत्र, पिण्ड और उनके अन्दर के संसार उत्पन्न होते हैं।''—Phys. op. fr. 2 Dox. p. 476. (R.P. 16)

वह कहता है कि यह ''शाश्वत एवं कालातीत'' और ''सम्पूर्ण जगत् को परिवेष्टित किये हैं।''— Hipp. Ref. i, 6 (R.P. 17a) और उसमें जिससे कि समस्त वस्तुओं की उत्पत्ति हुई है, एक बार फिर वे विलीन हो जाती हैं, जैसा कि उचित भी है क्योंकि कालक्रम के अनुसार किये गए अपने अन्यायों के लिए वे एक दूसरे की संतुष्टि और क्षतिपूर्ति करती हैं।'' इस प्रकार वह काव्यात्मक ढंग से उसका वर्णन करता है।—Phys. op. fr. 2 (R.P. 16)

''और इसके अतिरिक्त, एक शाश्वत गति भी थी जिसके कारण जगत् की उत्पत्ति हुई।''— Hipp. Ref. i. 6 (R.P. 17a) ''उसने वस्तुओं की उत्पत्ति के लिए, पदार्थ में किसी प्रकार के परिवर्तन को कारण नहीं बताया, बल्कि कहा कि मूल अधिष्ठान, जो कि एक असीम पिण्ड था, के विपक्षी तत्त्व धीरे-धीरे उससे अलग हो गए।''—Simple phys. p. 150, 20 (R.P. 18)

थियोफ्रेस्टस के उपर्युक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि एक ऐसा शाश्वत और अविनाशी तत्त्व है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होती है, उसकी स्थिति है और फिर उसमें उसका लय होता है। यह शाश्वत तत्त्व 'जल' या किसी अन्य भौतिक द्रव्य को नहीं माना जा सकता, क्योंकि चारों भौतिक द्रव्य पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु सान्त हैं और परम तत्त्व अनन्त होना चाहिए। इसके अतिरिक्त इनमें परस्पर संघर्ष भी है। यदि इन चारों भौतिक द्रव्यों में से किसी को भी अनन्त बना दिया जाय तो अन्य महाभूतों की सत्ता शेष नहीं रहेगी। पर उनकी सत्ता जगत् में है। अतः परम तत्त्व ऐसा होना चाहिए जो इन चारों महाभूतों से भिन्न हो और उनको भी उत्पन्न करता हो। एरिस्टॉटल[१] ने एनेक्ज़िमेण्डर के इस तर्क को इस प्रकार व्यक्त किया है—

''आगे, एक मात्र सरल पिण्ड जो अनन्त हो, सम्भव नहीं है, चाहे वह—जैसा कि कुछ लोग कहते हैं—अन्य महाभूतों से पृथक् ही क्यों न हो जिससे कि उनकी उत्पत्ति होती है अथवा उसके अन्दर वह योग्यता न पाई जाती हो। क्योंकि कुछ लोग ऐसे हैं जो इसको (ऐसा पिण्ड जो अन्य महाभूतों से पृथक् हो) अनन्त कहते हैं, वायु अथवा जल को नहीं; जिससे कि अन्य वस्तुएँ अपनी अनन्तता के कारण विनाश को न प्राप्त हो जायँ। उनमें

१ फ़िज़ि० (१, २०४ ब २२)

परस्पर संघर्ष है—वायु ठंडी है, जल नम, और अग्नि गरम—और इसलिए यदि इनमें से कोई अनन्त हो जाय, तो शेष का अब तक अस्तित्व ही समाप्त हो गया होता। अतएव उनके अनुसार जो अनन्त है, वह ऐसा होगा जो महाभूतों से स्वतंत्र हो और जिससे कि महाभूतों की उत्पत्ति होती है।''

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि एनेक्ज़िमेण्डर अपने द्रव्य के सिद्धान्त का एक ओर थेलीज़ और दूसरी ओर एनेक्ज़िमेनीज़ से अन्तर प्रकट कर रहा है। जगत् संघर्षमय है; विश्व कुछ नहीं पक्ष और विपक्ष के विरोधों का समुच्चय है। शीत का ताप से विरोध है और शुष्कता का नमी से। इनका संघर्ष सदियों से चला आ रहा है और चलता रहेगा। एक दूसरे के ऊपर प्रभुत्व 'अन्याय' है जिसके लिए उसे एक निर्धारित समय पर दूसरे की क्षतिपूर्ति करनी ही पड़ेगी। यदि थेलीज़ की बात मान ली जाय कि अनन्त जल जगत् का मूल कारण है तो फिर शुष्क और तप्त वस्तुओं का अस्तित्व ही नहीं होना चाहिए था, जैसा कि नहीं है। अतः तत्त्व इन द्वन्द्वों और विपक्षियों से बिलकुल अतीत होना चाहिए जिससे कि उनकी उत्पत्ति, स्थिति और लय होती है। एनेक्ज़िमेण्डर ने इस परम तत्त्व को अनन्त या असीम (Apeiron or The Boundless) कहकर पुकारा है। यह नित्य, अपरिणामी, अविनाशी और स्वयंभू है। स्वयं अपरिणामी, अगतिशील होते हुए भी यह संसार की गति, परिणाम, संघर्ष एवं विरोधों को उत्पन्न करता है। एनेक्ज़िमेण्डर जगत् के विकास के लिए इस संघर्ष अथवा विरोध को आवश्यक समझता है। संघर्ष या विरोध जगत् का प्राण है, अथवा जगत् ही है।

परम तत्त्व ''असीम'' की विशेषताएँ— एरिस्टॉटल के अनुसार, एनेक्ज़िमेण्डर का ''असीम तत्त्व'' एक निर्विशेष, निर्गुण, अगुणात्मक और अभेदित पदार्थ है जिसमें उसे अपने विशुद्ध द्रव्य[९] के भी दर्शन होते हैं। परन्तु बात ऐसी है नहीं। एरिस्टॉटल स्वयं जानता था कि एनेक्ज़िमेण्डर का असीम तत्त्व एक पिण्ड (Body)[१०] है जिसकी उत्पति उसके (एरि०) दर्शन में महाभूतों के पहले नहीं हो सकती थी। इसीलिए एनेक्ज़िमेण्डर के परम तत्त्व को उसने ''असीम पिण्ड'' के नाम से अभिहिंत किया जो कि महाभूतों के ''अतिरिक्त'' और साथ-साथ ''पृथक्'' है।

एरिस्टॉटल ने कई स्थानों पर एक दार्शनिक के विषय में चर्चा करते हुए लिखा है कि उसके अनुसार मूल-द्रव्य महाभूतों अथवा उनमें से दो के मध्य (Intermediate between) की वस्तु है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह विशेषण एनेक्ज़िमेण्डर के असीम के लिए प्रयुक्त किया गया है, पर कुछ के अनुसार एनेक्ज़िमेण्डर के असीम के लिए हो ही नहीं सकता। जब एक बार एनेक्ज़िमेण्डर ने अपने मूल-द्रव्य को महाभूतों से पृथक् (Distinct from the elements) मान लिया तो फिर उसी द्रव्य को वह महाभूतों के मध्य (Intermediate between) की वस्तु कैसे मान सकता है ? पर यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ''महाभूतों के मध्य'' वाला विशेषण महाभूतों से पृथक् वाले विशेषण से अधिक उपयुक्त हैं, क्योंकि एनेक्ज़िमेण्डर का असीम महाभूतों का जनक है और वह उससे बिल्कुल पृथक् नहीं हो सकता। एक स्थान पर एरिस्टॉटल ने असीम तत्त्व को मिश्रण (Mixture) के नाम से अभिहित किया है, पर इसका कोई खास महत्त्व नही है। यहाँ 'मिश्रण' कहने का यह

९ मेटा० अ, २, १०६६ ब १८
१० फिज़ि० ८, २०८ अ ८

तात्पर्य नहीं है कि यह कई तत्त्वों के संयोग से बना है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि इससे विभिन्न महाभूत 'पृथक्करण' द्वारा उत्पन्न होते हैं।

एनेक्जिमेण्डर ने मूल-तत्त्व को असीम और अनन्त इसलिए समझा जिससे कि ''सृष्टि का अन्त ही न हो जाय''। इसलिए कि सृष्टि का क्रम अनवरत रूप से चलता रहे, यह आवश्यक है कि वह मूल स्रोत जहाँ से सृष्टि उत्पन्न होती है, असीमित और अक्षय भण्डार वाला हो। जगत् में जितनी प्रतिद्वन्द्विताएँ (Oppositions) हैं, उनके भीतर निरन्तर संघर्ष चला करता है। कभी एक, दूसरे का अतिक्रमण करता है और कभी दूसरा पहले का। यही 'अन्याय' (Injustice) है। 'ताप' ग्रीष्म ऋतु में अन्याय करता है और शीत शिशिर ऋतु में। यदि यह आक्रमण निरन्तर चलता रहे और उस मूल स्रोत में, जहाँ से कि इन प्रतिद्वन्द्वियों की उत्पत्ति होती है, अक्षयपूर्ति भण्डार न हो, तो एक समय आयेगा जब कि सृष्टि का लय हो जायेगा। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मूल-द्रव्य जो सृष्टि का जनक है, जगत् के विरोधों से अतीत एक ऐसी अनन्त सत्ता है जो हमारे चारों ओर फैली हुई है।

सृष्टि-क्रम—कहा जाता है कि एनेक्जिमेण्डर के अनुसार ''असीम के भीतर असंख्य संसार''[११] हैं। इसका दो प्रकार से अर्थ लगाया जाता है। एक के अनुसार यह कि यद्यपि संसार अनित्य और क्षणभंगुर है, तब भी कई संसारों का अस्तित्व युगपद हो सकता है। इसके विपरीत जेलर का मत यह है कि किसी नये संसार का अस्तित्व तब तक नहीं आता जब तक कि प्राचीन संसार का अस्तित्व समाप्त न हो गया हो और एक समय में एक ही संसार का अस्तित्व रह सकता है। यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इसके विषय में थोड़ा विचार करना आवश्यक है।

प्रो० बर्नेट के अनुसार एनेक्जिमेण्डर जब असंख्य संसार की बात करता है तो उसका अर्थ युगपद अस्तित्व से ही है। थियोफ्रेस्टस ने भी जब परमाणुवादियों के ''असंख्य संसार''[१२] की चर्चा की है तो उसका अर्थ युगपत् संसार से ही है, क्रमागत संसार से नहीं। एनेक्ज़िमेण्डर के ही लिए नहीं, बल्कि एनेक्जिमेनीज़, जेनोफेनीज़, ल्यूसिपस, डेमॉक्रिटस, एपिक्यूरस इत्यादि सभी के लिए थियोफ्रेस्टस ने लिखा है कि वे युगपद असंख्य संसार में विश्वास करते थे। जेलर इस प्रमाण को मानने के लिए तैयार नहीं है। उनका कथन है कि जो व्यक्ति एनेक्ज़िमेनीज़ और जेनोफेनीज़ को ''असंख्य-संसार'' होने का हिमायती कहता है, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। प्रोफेसर बर्नेट के अनुसार, जेलर का यह आक्षेप ठीक नहीं, क्योंकि एनेक्ज़िमेनीज़ ''असंख्य संसार'' में अवश्य विश्वास करता था और जेनोफेनीज़ के विषय में भी यह कथन असम्भव नहीं है। सिम्पलीशियस[१३] ने इस बात की पुष्टि की है कि एनेक्ज़िमेण्डर युगपद कई संसारों में विश्वास करता था। उसने एक स्थान पर लिखा है—

''एनेक्ज़िमेण्डर, ल्यूसिपस, डेमॉक्रिटस और तदन्तर एपिक्यूरस इत्यादि जिन्होंने असंख्य संसारों की कल्पना की थी, की धारणा है कि वे उत्पन्न होते हैं और फिर विनाश को प्राप्त होते हैं: कुछ की उत्पत्ति और कुछ का विनाश यह क्रम निरंतर अनन्त

---

११ (प्लूटा०) स्ट्रोमेटीज, फ्रैग्मे० २

१२ (प्लूटा०) स्ट्रोमेटीज, फ्रैग्मे० २

१३ फिजि०, पृ० ११२१, ५

तक चलता रहता है।''

ग्रीक डॉक्सोग्राफर लोगों के कथनानुसार ''असीम'' के भीतर से ''नित्य गति'' (Eternal Motion) ने सभी आकाशीय पिण्डों और भूमण्डलों को उत्पन्न किया। यहाँ 'नित्य गति' से तात्पर्य किसी ग्रह के सूर्य के चारों ओर दैनिक परिक्रमण से नहीं है, क्योंकि प्रथम असंख्य संसारों के साथ इसकी असंगति होगी और दूसरे किसी ग्रह का दैनिक परिक्रमण कार्य है और असीम की 'नित्य गति' उसका कारण है। इस 'नित्य गति' का वास्तविक स्वरूप क्या है, इसके विषय में एनेक्ज़िमेण्डर ने कोई निश्चित बात नहीं कही है। उसका ''पृथक्करण'' पद संकेत करता है कि ''नित्य गति'' से तात्पर्य उस प्रकार के व्यापार अथवा प्रक्रिया से है जो हमें छलनी से छानने में दिखाई पड़ता है। इसी छानने की क्रिया द्वारा ही ''असीम'' से सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति हुई है। पर जब एक बार ''पृथक्करण'' द्वारा ''असीम'' से जगत् की उत्पत्ति हो जाती है, फिर उसकी गति और असीम की नित्य गति में पर्याप्त अन्तर हो जाता है।

उत्पत्ति के बाद जगत् की गति को समझाने के लिए एनेक्ज़िमेण्डर ने जल या वायु के अन्दर उत्पन्न आवर्त्त (भँवर) की उपमा दी है। जो माइलेशियन दार्शनिक 'जल' से प्रारम्भ करके 'वायु' तक पहुँचते हैं, उनके लिए इस प्रकार की उपमा देना युक्तियुक्त ही है।

पृथ्वी, जल तथा वायु—आन्तरिक गति (Internal Motion) के परिणामस्वरूप 'असीम' से पृथक्करण द्वारा पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि इत्यादि महाभूत उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी और जल जो भारी महाभूत हैं, मध्य में स्थान ग्रहण करते हैं और अग्नि जो हलका महाभूत है, परिधि की ओर स्थान पाता है। वायु, जो पृथ्वी और जल से हलकी तथा अग्नि से भारी है, इन सबसे बीच में स्थित रहती है। असीम से सृष्टि किस प्रकार उत्पन्न हुई है, इसका आभास डॉक्सोग्राफर थियोफ्रेस्टस[१४] ने इस प्रकार दिया है—

''वह कहता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में एक ऐसी वस्तु पृथक् हुई जिसके अंदर नित्य द्रव्य से शीत और ताप उत्पन्न करने की क्षमता थी। उसके भीतर से एक ज्योति-मंडल जो कि पृथ्वी को परिवेष्ठित करने वाली वायु से उसी तरह संलग्न था जिस प्रकार वृक्ष से छिलका संलग्न रहता है, प्रज्वलित हुआ। जब यह पृथक् होकर चक्राकार रूपों में परिणत हुआ तो सूर्य, चन्द्रमा और सितारों का अस्तित्व हुआ।''

उपर्युक्त उद्धरण से प्रकट होता है कि असीम का एक अंश जब जगत् को उत्पन्न करने के लिए उससे पृथक् हुआ तो प्रथम वह दो विरोधी वस्तुओं—तप्त और शीतल के रूप में भेदित हुआ। तप्त एक ज्योति-मंडल की भाँति शीतल को परिवेष्टित किए हुए था; शीतल ने पृथ्वी का रूप धारण किया जिसको वायु ने परिवेष्टित कर रक्खा था। यहाँ पर हमें यह नहीं बताया गया कि पृथ्वी, जल और वायु उस ''शीतल'' से किस प्रकार उत्पन्न होते हैं। एरिस्टॉटल की प्रसिद्ध पुस्तक, मीटियोरॉलॉजी[१५] (Meteorology) में एक परिच्छेद है जिसमें इस विषय में थोड़ा प्रकाश डाला गया है—

''प्रथम उनका कथन है कि 'सम्पूर्ण भौमिक क्षेत्र नम था और जब यह ताप द्वारा सूख गया, इसका एक अंश जिसका वाष्पीकरण हुआ, हवाओं और सूर्य एवं चाँद के पृष्ठभाग के

---

१४ प्लूटा० स्ट्रोमैटीज़, फ्रै० २

१५ मीटियो० बी० I, ३५३ बी० ५ और २, ३५५ ए० २१

रूप में परिणत हुआ, तथा जो अंश शेष रह गया, समुद्र के रूप में परिणत हुआ।'

उस नम और शीतल पदार्थ से, जो सृष्टि के प्रारम्भ में ''असीम'' से पृथक् हुआ, पृथ्वी और समुद्र किस प्रकार उत्पन्न हुए, इसके विषय में इस प्रकार वर्णन किया गया है—

'समुद्र मौलिक आर्द्रता (Original Moisture) का शेषांश है। अग्नि ने इसके अधिकांश भाग को तो बिल्कुल ही सुखा दिया है, और शेष को दग्ध करके नमक बना दिया है।'

—ईटियस iii, १६ I (R.P. २० a)

'वह कहता है कि पृथ्वी बेलनाकार है और उसकी गहराई उसकी चौड़ाई का तृतीयांश है।'

—प्लूटा स्ट्रोमै० फ्रे० २ (R.P. २०)

'पृथ्वी स्वतंत्र रूप से विचरण करती है, जिसका कोई आधार नहीं है और प्रत्येक वस्तु से समदूरस्थ होने के कारण अपने स्थान पर स्थिर रहती है। इसका आकार गोल है और यह खोखली है और पाषाण-स्तम्भ की तरह है। हम इसके केवल एक धरातल पर हैं, दूसरे सभी धरातल विपरीत दिशा में हैं।'

—हिप्पो० १, ६ (R.P. २०)

आकाशीय पिण्ड—हम पहले ही देख चुके हैं कि प्रथम जब असीम से तप्त और शीतल पदार्थ उत्पन्न हुए, तप्त पदार्थ की ज्वाला ने शीतल पदार्थ की आर्द्रता को वायु अथवा भाप के रूप में परिणत कर दिया। फिर इस भाप के प्रसरण से बाहर का अग्नि-मण्डल चक्राकार रूपों में परिवर्तित हुआ जिससे सूर्य, चन्द्र एवं अन्य आकाशीय पिण्डों की रचना हुई। डॉक्सोग्राफर हिप्पोलिटस[१६] और ईटियस के अनुसार, ये आकाशीय पिण्ड अग्नि-मण्डल हैं जो कि सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न तप्त पदार्थ से पृथक् हुए हैं तथा वायु द्वारा परिवेष्टित हैं। जिस प्रकार किसी बाँसुरी में स्वरों के उतार-चढ़ाव के लिए छिद्र होते हैं उसी प्रकार इन आकाशीय अग्नि-मण्डलों में भी कुछ रन्ध्र होते हैं जिनके माध्यम से ये आकाशीय पिण्ड हमें चमकते हुए दीख पड़ते हैं। अग्नि-मण्डलों के रन्ध्र जब बन्द हो जाते हैं तो ग्रहण लगता है। चन्द्रमा का घटना और बढ़ना इन रन्ध्रों के बन्द होने और फिर खुलने से ही होता है। सूर्य-मण्डल, पृथ्वी मंडल से २७ गुना बड़ा है तथा चन्द्रमा का मण्डल पृथ्वी-मण्डल से १८ गुना बड़ा है। सूर्य-मण्डल की ऊँचाई अधिकतम है तथा सितारों की ऊँचाई निम्नतम है। इन आकाशीय पिण्डों के चारों ओर वायु-मण्डल है जो इन्हें पृथ्वी की परिक्रमा करने को विवश करता है।

जीव—एनेक्ज़िमेण्डर का जीवित प्राणियों के विषय में जो सिद्धान्त है, वह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। थियोफ्रेस्टस ने इसके विषय में जो कुछ लिखा है, उसे कुछ डॉक्सोग्राफरों ने बिलकुल सुरक्षित रूप में रख छोड़ा है। उनके कुछ उद्धरण यहाँ दिए जाते हैं—

जब नम-तत्त्व का सूर्य की गरमी से बाष्पायन हुआ तो उससे जीवित प्राणियों की सृष्टि हुई। प्रारम्भ में मनुष्य एक दूसरे जानवर, जैसे मछली, के आकार का था।'

—हिप्पो० रेफ० i ६ (R.P. २२ अ)

'आगे वह कहता है कि प्रारम्भ में मनुष्य कि उत्पत्ति एक उपजाति के जानवर से हुई। उसका कारण यह है कि दूसरे जानवर जल्दी ही अपने लिए भोजन की व्यवस्था कर लेते

---

१६ हिप्पो० रेफ० i ६ (R.P. २०)

है। यह मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे [illegible] एक लम्बी अवधि की आवश्यकता होती है। [illegible] प्रारम्भ में भी [illegible] जैसा कि वह अब है, उसका अस्तित्व [illegible] कभी भी [illegible]। —प्लूटा० स्ट्रोमि० फ्रैग्मे० २ (R.P. २२)

उपर्युक्त [illegible] से पता लगता है कि एनेक्ज़िमेण्डर ने डार्विन की भाँति विकासवाद के सिद्धान्त का [illegible] किया। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि एनेक्ज़िमेण्डर 'वातावरण के साथ अनुकूलता' और 'योग्यतम अतिजीविता' के सिद्धान्त में अटूट विश्वास करता था तथा [illegible] भी देखा कि [illegible] स्तनपायी प्राणी प्रारम्भिक जीवों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। इसके लिए उसने ऐसी सामुद्रिक मछली की खोज की जिसकी [illegible] के साथ [illegible] समानता हो। उसका विश्वास था कि सभी जीव प्रारम्भ में मछली थे और उसी से सब जीवों की उत्पत्ति हुई है। संसार की हर एक वस्तु को अन्त में उसी मूल तत्त्व (असीम) तक लौट जाना है जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई थी और फिर दूसरी वस्तु के रूप में संसार में जन्म लेना है। इस प्रकार सृष्टि का क्रम निरन्तर चलता रहेगा। यह [illegible] का [illegible] सृष्टि-परिवर्तन का सिद्धान्त था। एनेक्ज़िमेण्डर के [illegible] (Cyclical Recurrence) मत के अनुसार अगणित संसार कालक्रमानुसार उत्पन्न होते हैं और नष्ट होते हैं, पर उनके अन्दर कभी भी सह-अस्तित्व नहीं होता। किसी वस्तु की उत्पत्ति उसके प्रति अन्याय है, क्योंकि उससे उसकी पूर्णता या अनन्तता छिन जाती है। अतः न्याय की माँग है कि उसकी असीमता उसे पुनः प्राप्त हो जाय। इस प्रकार एनेक्ज़िमेण्डर के अनुसार सृष्टि में पृथक्करण (Separation) की प्रक्रिया का [illegible] निरन्तर [illegible] गति से चलता रहता है।

एनेक्ज़िमेण्डर का दर्शन अपने पूर्ववर्ती दार्शनिक थेलीज़ के दर्शन से कई बातों में [illegible] और [illegible] है—

(१) वह [illegible] के मूल को भी पता लगाने की चेष्टा करता है। वह मूल द्रव्य कोई [illegible] असीम (Apeiron) है।

(२) वह [illegible] की विभिन्न अवस्थाओं का भी वर्णन करता है।

(३) "असीम" का निरूपण करके एनेक्ज़िमेण्डर ने एक ऐसे सूक्ष्म अमूर्त चिन्तन का [illegible] किया है जो उसके पूर्ववर्ती दार्शनिक थेलीज़ के मूर्त द्रव्य 'जल' में नहीं पाया जाता।

हाँ, यहाँ पर यह ध्यान देने की बात है कि एनेक्ज़िमेण्डर का **असीम** अमूर्त तो है, पर [illegible] नहीं है। वह एक ठोस, निर्विकल्प और निर्गुण द्रव्य है। उसके असीम की विशुद्ध [illegible] शब्दों में व्याख्या करना निरी मूर्खता होगी। यह हमारे मन अथवा बुद्धि की [illegible] नहीं है। गणितज्ञ लोग भी 'असीम' या 'अनन्त' के विषय में चिन्तन करते हैं, पर उनके 'अनन्त' का विचार केवल काल्पनिक ही है। एनेक्ज़िमेण्डर का जो असीम है, वह एक ठोस पदार्थ (Solid Mass) है, जैसा कि सुप्रसिद्ध दर्शन-इतिहासकार ज़ेलर ने कहा है, "असीम एक विधेय (Predicate) है, उद्देश्य (Subject) नहीं।"

३. एनेक्ज़िमेनीज़ (Anaximenes) (५८८ ई० पू०—५२४ ई० पू०)

जीवन-वृत्त— एनेक्ज़िमेनीज़ भी माइलेटस का निवासी था। थियोफ्रेस्टस के अनुसार, वह एनेक्ज़िमेण्डर का शिष्य था और बाद में उसका सहयोगी बन गया। एनेक्ज़िमेनीज़ के

अन्दर अपने गुरु की तरह न तो उतनी प्रखर बुद्धि थी और न वैसी मौलिकता ही। जहाँ तक उसके द्वारा लिखित साहित्य का प्रश्न है, कहा जाता है कि उसने एक पुस्तक[२७] अवश्य लिखी थी जो साहित्यिक समालोचना-युग तक कायम रही। उसकी लेखन-शैली, अपेक्षाकृत एनेक्ज़िमेण्डर के गद्यमय और शुष्क थी जिसमें उसके गुरु की बुद्धिमत्ता व प्रगाढ़ता का सर्वथा अभाव था।

एनेक्ज़िमेनीज़ उन दार्शनिकों में से एक था जिसके विषय में महान् डॉक्सोग्राफर थियोफ्रेस्टस ने विशेष निबन्ध लिखे थे। निम्नलिखित गद्यांशों से उसके दर्शन का हमें पूर्ण विवरण प्राप्त हो सकता है—

'यूरिस्ट्रेटस का पुत्र, माइलेटस-निवासी एनेक्ज़िमेनीज़, जो कि एनेक्ज़िमेण्डर का सहयोगी भी रह चुका था, का कथन था कि अन्तर्निहित द्रव्य एक और अनन्त है। पर एनेक्ज़िमेण्डर की भाँति उसने यह नहीं कहा है कि वह निर्विशेष है, वरन् वह सविशेष ही है, क्योंकि उसने बताया कि वह द्रव्य वायु है।' —फिजि० फ्रै० २ (R.P. २६)

'उसने फिर बताया कि इससे वे सभी वस्तुएँ जो हैं, जो हो चुकी हैं अथवा जो होने वाली हैं, देवता व सभी दैवी वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं तथा और शेष वस्तुएँ इनकी ही वंशज हैं।'

—हिप्पो० रेफ० १ ७ (R.P. २८)

'उसने कहा कि जिस प्रकार हमारी आत्मा, वायु होने के कारण, हमें धारण किए हुए है, उसी प्रकार प्राण एवं वायु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण किए हैं।'

—ईटि० रेफ० १, ३, ४ (R.P. २४)

'यह अपनी 'विरलीकरण' और 'संहनन' शक्ति के कारण विभिन्न द्रव्यों में भिन्न-भिन्न रूप में पाई जाती है।'

—फिजि० फ्रै० २ (R.P. २६)

'जब यह प्रसरित होकर विरल हो जाती है, तो अग्नि का रूप धारण कर लेती है; इसके विपरीत, पवन कुछ नहीं संहनित वायु ही है। नमदित होकर वायु, बादल बनाती है, और बादल दुबारा संहनित होकर जल का रूप धारण करते हैं। जल एक बार फिर संहनित होकर पृथ्वी के रूप में परिणत हो जाता है; और संहनन की चरम सीमा तक पहुंचने पर वह पत्थर का रूप धारण कर लेता है।'

—हिप्पो० रेफ० १, ७ (R.P. २८)

उपर्युक्त उद्धरणों को देखने से पता चलता है कि यहाँ पर दार्शनिक चिन्तन-प्रणाली का ह्रास हुआ है, क्योंकि यहाँ पर हम एनेक्ज़िमेण्डर के सूक्ष्म चिन्तन से दूर हटकर एक स्थूल वस्तु को अपने चिन्तन का विषय बनाते हैं। परन्तु बात ऐसी है नहीं। एनेक्ज़िमेनीज़ के पूर्ववर्ती दार्शनिकों, थेलीज़ और एनेक्ज़िमेण्डर ने सृष्टि की उत्पत्ति के लिए मूल-द्रव्य के अन्दर केवल एक ही प्रकार की प्रक्रिया (रूपान्तरण अथवा पृथक्करण) का प्रतिपादन किया था, पर एनेक्ज़िमेनीज़ ही प्रथम दार्शनिक था जिसने जगत् के भीतर पाये जाने वाले विरोधों की व्याख्या के लिए मूल-द्रव्य के भीतर एक नहीं, बल्कि दो मौलिक प्रक्रियाओं की कल्पना की जिनका नाम उसने विरलीकरण (Rarefaction) और संहनन

२७ डायोजेनीज़, ii, ३ (R.P. २३)

(Condensation) तथा विरलन रूप से ... [illegible] ... सिद्धान्त ... [illegible] ... जिस मत के अनुसार संसार की समस्त वस्तु एक ही [illegible] परिवर्तित रूप है, उसके लिए संसार के भीतर जितनी वस्तुएँ ... [illegible] ... के सिवाय और कुछ नहीं हो सकतीं। ... [illegible] ... के अन्दर जितनी भी विभिन्नताएँ पायी जाती हैं, उसका कारण मूल-तत्त्व ... [illegible] ... वस्तुओं के अन्दर न्यूनाधिक मात्रा में ... [illegible] ... मूल-तत्त्व को महाभूतों से पृथक् ... [illegible] ... इस सिद्धान्त को मान लिया जाय तो ... [illegible] ... आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है।

वायु—एनेक्जिमेनीज ने जिस वायु को जगत् का मूल कारण बताया है, वह [illegible] के विज्ञान का विशुद्ध 'वायु' नहीं है, बल्कि इसके अन्दर अन्य कई चीजों का भी [illegible] ... होता है, तो वह [illegible] हो जाता है। साधारण अवस्था में ... [illegible] ... वायु है जिसे हम श्वास के रूप में ... [illegible] ... और इसे हम 'वायु' कहते हैं ... [illegible] ... एनेक्जिमेनीज की वायु ... [illegible] ... और जो ... [illegible] ... और यहाँ तक कि अन्धकार ... [illegible] ... इसके अन्दर धुंध (Mist) और वाष्प (Vapour) और ... [illegible] ... ग्रीक दर्शन के इतिहास में एम्पेडोक्लीज प्रथम व्यक्ति था जिसने बताया कि वायु पृथक् स्वतंत्र तत्त्व है जो न तो 'वाष्प' है और न 'रिक्त आकाश'। ... [illegible] ... जितने भी प्रकृति-शास्त्री हो चुके हैं, उन सबके अनुसार 'वायु' एक प्रकार का वाष्प है। एम्पेडोक्लीज ने यह बताया कि 'अन्धकार' वायु नहीं, वरन् एक प्रतिच्छाया है।

एनेक्जिमेनीज ने 'वायु' को ही जगत् का मूल कारण बताया, इसके कई कारण हैं—

(१) संसार की सभी वस्तुएँ सविशेष हैं। एनेक्जिमेण्डर का ... [illegible] ... उनका कारण नहीं हो सकता। वह मूल कारण 'वायु' है।

(२) एनेक्जिमेण्डर के दर्शन में 'वायु' का स्थान दो ... [illegible] ... (अग्नि) और "शीतल" (पृथ्वी, जल) के मध्य में ... [illegible] ... जल, शीतल और नम है। इसके मध्य की वस्तु ... [illegible] ... अतिरिक्त दूसरी वस्तु नहीं हो सकती। वायु के ... [illegible] ... प्रमाण यह है कि एनेक्जिमेनीज के अनुसार वायु ... [illegible] ... गरम हो जाती है और जब ... [illegible] ... दोनों के बीच की चीज हुई। ... [illegible] ... श्वास लेते हैं, वायु गर्म होती है ... [illegible] ... होती है।[१८]

(३) तीसरा जो सबसे ... [illegible] ... जिस प्रकार हमारी आत्मा जो वायु-स्वरूप है ... [illegible] ... और वायु ने सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त कर रखा है।" ... [illegible] ... सम्बन्ध है जो कि उसका मनुष्य के जीवन से ... [illegible]

प्लूटा, दि प्लेसि० फि० [illegible]

[illegible] १, ३, ४ ([illegible])

को सचेतन मानता था।

सृष्टि क्रम— एनेक्ज़िमेनीज़ ने सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में कहा है—'वह कहता है कि जब वायु नमदित हुई, सर्वप्रथम पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। यह पर्याप्त विस्तृत है और इसीलिए वायु द्वारा अवलम्बित है।'

—प्लूटा-स्टोमै० फ्रै० ३ (R.P. २५)

'ठीक उसी प्रकार सूर्य, चाँद एवं अन्य आकाशीय पिण्ड जो अग्नि-स्वरूप हैं, अपने विस्तार के कारण वायु द्वारा अवलम्बित हैं।' पृथ्वी की नमी के ऊपर उठने से आकाशीय पिण्डों की रचना हुई। जब इसका विरलीकरण हुआ, अग्नि का अस्तित्व आया और इसी अग्नि ने थोड़ा और ऊपर उठकर सितारों को जन्म दिया।'

—हिप्पो० रेफ i ७, ४-६ (R.P. २८)

'जब वायु का संहनन हुआ तो 'पवन' की उत्पत्ति हुई जो उत्क्षेपण द्वारा आगे बढ़ता है, लेकिन अब यह एक बार फिर केन्द्रीभूत और घनीभूत होती है, बादलों की उत्पत्ति होती है, और अन्त में, यह जल के रूप में परिवर्तित हो जाती है।'

—हिप्पो० रेफ i ७, ७, (डॉक्सो० पृ० ५६१

—ईटि० iii, १०, ३

'पृथ्वी का रूप एक मेज की तरह है'

संक्षेप में, वायु का जब विरलीकरण होता है तो अग्नि एवं अन्य आकाशीय पिण्ड उत्पन्न होते हैं। जब उसका संहनन होता है तो पवन→बादल →जल →पृथ्वी →पत्थर इत्यादि उत्पन्न होते हैं।

एनेक्ज़िमेण्डर की तरह एनेक्ज़िमेनीज़ ने भी असंख्य संसार में विश्वास किया, इसमें भी वही कठिनाइयाँ आती हैं जो एनेक्ज़िमेण्डर के दर्शन में आयी थीं।

विशेषताएँ— एनेक्ज़िमेनीज़ यद्यपि उतना बड़ा दार्शनिक नहीं था जितना कि उ... एनेक्ज़िमेण्डर, पर परवर्ती दर्शन पर उसके दर्शन का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उसके अ... ...सार में जो गुणात्मक भेद पाये जाते हैं, वे मूल-रूप में परिमाणात्मक हैं। संसा... ...धों को सिद्ध करने के लिए उसने 'विरलीकरण' और 'संहनन' दो प्रकार के ... ...द्धान्तों में विश्वास किया जो पिछले दार्शनिकों में अभी तक नहीं पाया गया था

पाइथेगोरस और उसके अनुयायी